

## धर्मरथ

रावनु रथी बिरथ रघुबीरा । देखि बिभीषन भयउ अधीरा ॥  
अधिक प्रीति मन भा संदेहा । बंदि चरन कह सहित सनेहा ॥  
नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना । केहि बिधि जितब बीर बलवाना ॥  
सुनहु सखा कह कृपानिधाना । जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना ॥  
सौरज धीरज तेहि रथ चाका । सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका ॥  
बल बिबेक दम परहित घोरे । छमा कृपा समता रजु जोरे ॥  
ईस भजनु सारथी सुजाना । बिरति चर्म संतोष कृपाना ॥  
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा । बर बिग्यान कठिन कोदंडा ॥  
अमल अचल मन त्रोन समाना । सम जम नियम सिलीमुख नाना ॥  
कवच अभेद बिप्र गुर पूजा । एहि सम बिजय उपाय न दूजा ॥  
सखा धर्ममय अस रथ जाके । जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके ॥  
दो.- महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो बीर ।  
जाके अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर ॥